Dr.Uttam Kumar
SRAP College,Barachakia
Mob no-8210561032

Faculty -Commerce
Subject -Business Organisation
Class -2nd Semester
Session-2023-27

विकास में पूरा सहयोग देती हैं। केवल आवश्यकता इस बात की है कि इनके दोषों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

भारत में सहकारी संगठनों का भविष्य
(PROSPECTS OF CO-OPERATIVE ORGANISATIONS IN INDIA)

भारत एक विकासशील देश है। हमारे सामने अनेक समस्याएँ हैं जिनका समाधान करना आवश्यक है। हमने देश में समाजवादी समाज की रचना का संकल्प लिया है जिसे पूरा करने तथा विद्यमान समस्याओं का समाधान करने के लिए आज भारत में सहकारिता की सबसे अधिक आवश्यकता है। **डॉ. पी.आर. देशमुख** के अनुसार, "चाहे हम अपने प्रयत्नों में सफल हों या असफल, हमारे पास सिवाय सहकारिता के अन्य कोई साधन नहीं है। सहकारिता राष्ट्रीय माँग है। वर्तमान परिस्थितियों और समय जिसमें हम रहते हैं, सहकारिता की नितान्त आवश्यकता है।" यही कारण है कि हमारी वर्तमान सरकार इस आन्दोलन की सफलता के लिए भरपूर प्रोत्साहन दे रही है किन्तु ध्यान रहे कि सहकारी आन्दोलन जन-समुदाय का आन्दोलन है। इसकी सफलता के लिए उन सभी वर्गों का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है जिनके लिए यह आन्दोलन किया जा रहा है। केवल नारेबाजी अथवा ऊँचे-ऊँचे आदर्शों के ढोल पीटकर लोगों की मनोभावनाओं को प्रभावित कर इस आन्दोलन को लोकप्रिय नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए यह आवश्यक है कि नि:स्वार्थ व्यक्ति आगे आकर संचालन करें, सहकारी समितियाँ राजनीतिक एवं बाहरी प्रभाव से मुक्त हों, वे अपना कार्य स्वयं करें, शोषित वर्ग का आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण करने में समर्थ हों, दुर्बल एवं निष्क्रिय सहकारी समितियों का पुनर्गठन किया जाए तथा समूचे आन्दोलन को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल ढाला जाए। जनसाधारण के दिल में इस आन्दोलन के प्रति प्रेम जाग्रत किया जाए। यह हर्ष का विषय है कि हमारी पंचवर्षीय योजनाओं में भी इस आन्दोलन के सुनियोजित विकास कार्यक्रमों को समुचित स्थान दिया गया है। धीरे-धीरे हमारे सामान्य जीवन में सहकारी आन्दोलन घर करता जा रहा है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारत में सहकारी आन्दोलन का भविष्य निश्चयात्मक रूप से उज्ज्वल है।

भारत में सहकारिता की भावना के आधार पर ही सामाजिक व्यवस्था का वर्णन वेदों एवं उपनिषदों में है। उपनिषदों में यह स्पष्ट लिखा है कि "संसार में जो कुछ है, वह सब ईश्वर का ही है और मानव को इस स्वामित्व का पूर्णरूपेण विचार रखते हुए सम्पत्ति का मिल-जुल कर उपयोग करना चाहिए।" भारत की संयुक्त परिवार प्रथा सहकारी जीवन का सर्वोत्तम उदाहरण है। भारत के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौटिल्य ने भी अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में मिल-जुलकर कार्य करने की बात लिखी है। प्राचीन भारत की ग्रामीण व्यवस्था तो पूर्णत: एक-दूसरे के सहयोग पर आधारित रही है।

प्रश्न
(QUESTIONS)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. सहकारी संगठन से आप क्या समझते हैं ? इसके गुण-दोषों की व्याख्या कीजिए।
   What do you understand by co-operative organisation ? Discuss its advantages and disadvantages.
2. सहकारी संगठन से आप क्या समझते हैं ? इसकी प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
   What do you understand by co-operative organisation ? Discuss its main characteristics.
3. सहकारी संगठन को परिभाषित कीजिए। इसकी विशेषताएँ बतलाइए।
   Define co-operative organisation. Explain its characteristics.
4. संगठन के सहकारी प्रारूप की विशेषताओं, गुणों एवं सीमाओं की चर्चा कीजिए।
   Discuss the characteristics, merits and limitations of co-operative form of organisation.
5. "सहकारिता उपभोक्ताओं के लिए लाभप्रद है।" इस कथन का भारतीय सन्दर्भ में आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।
   "Co-operation is useful to consumers." Discuss this statement critically with reference to Indian conditi

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. सहकारी संगठन से आपका क्या अभिप्राय है ?
   What do you mean by co-operative organisation ?
2. सहकारी संगठन की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।
   Explain any three characteristics of co-operative organisation.